[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

I

Sr. No. of Question Paper : 2006

Unique Paper Code : 2053100009

Name of the Paper : हिंदी यात्रा साहित्य

Name of the Course : B.A. (Hons.) HINDI – DSE

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए : (8+8=16)

(क) किन्नर देवताओं का देश है, अलंकारिक नहीं सीधी भाषा में। देवता प्रकाश के प्राणी कहे गये है, किन्तु मैं समझता हूँ वह घोर अंधकार वासी हैं। जब तक मनुष्य के हृदय में घोर अज्ञान न हो देव लोग वहाँ ठहरना नहीं चाहते। कल (23 मई) दो

P.T.O.

मील नीचे कोठी की देवी का मेला था। देवी-देवताओं के लिए हर महीने मेला या भोज होता रहता है। कहीं-कहीं तो मेले के समय देवता के भण्डार से शराब की सदाव्रत भी दी जाती है। नहीं दी जाये, तो भी देवताओं का मेला शराब के विना कैसे हो सकता है? देवताओं ने शराबबंदी हटाने के लिए राजा को मजबूर किया उसके कुल तक को नष्ट कर देना चाहा।

अथवा

"यायावर पुराविद् नहीं होते, न पुरातत्व उनके लिए स्वयं एक साध्य होता है - वह केवल दूसरों के संचित अनुभव के फल के रूप में महत्व रखता है। यह महत्व कम नहीं है, और यह कथन पुरातत्व को अवज्ञा तो कदापि नहीं है। तक्षशिला, नालन्दा, सारनाथ, ये नाम यायावर के शरीर में पुलक उत्पन्न करते हैं किन्तु इसलिए नहीं कि वे प्राचीन खंडहरों के नाम हैं, वरन् इसलिए कि ये सांस्कृतिक विकास के समष्टि के अनुभव पर आधारित जीवन की उन्नततर परिपाटियों के आविष्कार के-कीर्ति-स्तम्भ हैं। अन्ततोगत्वा बात एक ही है, किन्तु एक नहीं भी है। भेद आत्यन्तिक वस्तु का नहीं है, केवल दृष्टिकोण का है, वस्तु से व्यक्ति के सम्बन्ध का भेद है।

(ख) इन पहाड़ों के पीछे न जाने क्या होगा? जब हम छोटे थे, तो अपने घर के बरामदे में खड़े होकर अक्सर एक-दूसरे से यह प्रश्न पूछा करते थे। उन दिनों छुट्टी लेकर पहाड़ों पर जाने की

जरूरत महसूस नहीं होती थी - वे हमेशा हमारे संग थे, हमारे खेलों में, हमारे सपनों में। तब पहाड़ों की शक्ल, उनकी भाव-भंगिमा बिलकुल अलग, दूसरी किस्म की थी, जैसे माँ की शक्ल जो बच्चों की आँखों मे होती है, वह दूसरों के लिए नहीं होती।उसकी पहचान ही अलग होती है।

अथवा

आज तो उमानन्द जनविहीन-सा दिख रहा है किन्तु शिवरात्रि पर यहाँ ऐसा जन-अरण्य लगता है कि साथ छुट जाए तो साथी को ढूँढते ही रहिये। शिवरात्रि को सूर्योदय से पहले ही दर्शनार्थियों का यहाँ ताँता लग जाता है सैकड़ो नाव-जहाज श्रद्धालुओं को ले जाने, लाने के काम में देर रात तक जुटे रहते हैं। वैसे ये तीनों द्वीप आसपास ही हैं, जहाँ नाव द्वारा कभी-भी जाया जा सकता है परन्तु वर्षाऋतु में जाना श्रेयस्कर है, तब ब्रह्मपुत्र उफान पर होता है।

2. यात्रा साहित्य का अर्थ समझाते हुए, इसके तत्वों का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

यात्रा साहित्य को परिभाषित करते हुए इसका महत्व बताइए।

3. यात्रा साहित्य समाज और संस्कृति को समझने में कैसे सहायक है? स्पष्ट कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी यात्रा साहित्य का सामान्य परिचय दीजिए।

4. हिंदी यात्रा साहित्य में राहुल सांकृत्यायन के योगदान को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा-वृत्तांत के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालिए।

5. निर्मल वर्मा कृत चीड़ों पर चाँदनी यात्रा-वृत्तांत के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'कामाख्या क्षेत्रे गुवाहाटी नगरे यात्रा वृत्तांत का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

6. **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7+7=14)

(क) द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य

(ख) चीड़ों पर चाँदनी में प्रकृति चित्रण

(ग) यात्रा और यायावर

(घ) यात्रा-साहित्य की विशेषताएँ